# स्कूल शिक्षा विभाग, पंजाब

# कक्षा 11वीं

## सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

1. वह तोड़ती पत्थर
2. जागो फिर एक बार

# वह तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर।
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन।

प्रसंग : यह पद 'वह तोड़ती पत्थर' नामक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं। निराला जी इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती महिला की स्थिति का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या - कवि ने एक मज़दूरनी को इलाहाबाद के सड़क पर पत्थर तोड़ते देखा। वहाँ कोई छायादार पेड़ भी न था, जिसके नीचे वह बैठती। वह साँवले रंग की थी, पर उसका यौवन भरा हुआ था। नीचे नेत्र किए वह पूरे मन से अपने काम में लगी हुई थी।

गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार –
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।
चढ़ रही थी धूप
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप।
उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू
गर्द चिनगी छा गई,
प्रायः हुई दोपहर
वह तोड़ती पत्थर।

प्रसंग : यह पद 'वह तोड़ती पत्थर' नामक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं। निराला जी इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती महिला की स्थिति का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या – कवि निराला जी कहते हैं कि भारी हथौड़ा हाथ में लिए हुए वह बार-बार चोटें मार रही थी। उसके सामने ऊँची-ऊँची इमारतें, अटारियाँ तथा वृक्षों की कतारें थीं। गर्मी के दिन थे। धूप चढ़ रही थी। सूर्य तमतमाया हुआ था। झुलसाने वाली लू चल रही थी। धरती रूई की तरह जल रही थी। धूल उड़ रही थी। दोपहर हो गई थी, पर वह पत्थर तोड़ रही थी।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार।
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं।
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा –
'मैं तोड़ती पत्थर।'

प्रसंग : यह पद 'वह तोड़ती पत्थर' नामक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं। निराला जी इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती महिला की स्थिति का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या – कविवर निराला जी कहते हैं कि उसने मुझे अपनी ओर देखते हुए देखा, और तुरंत ही उसने अपने सामने वाले भवन की ओर देखा। देखा कि वहाँ कोई नहीं है फिर उसने मेरी ओर देखा। मुझे अपनी ओर देखते देखकर अपनी हीन दशा से वह संकुचित नहीं हुई। उसके हृदय में जो झंकार नहीं भी थी, वह मैंने सितार सजाकर अपनी कल्पना शक्ति से सुनी। उसके माथे से पसीने की बूंद गिर पड़ी। एक बार क्षण भर दूसरी ओर देखने के बाद वह फिर अपने काम में लग गई, जैसे वह कह रही हो, मैं पत्थर तोड़ रही हूँ।

## अभ्यास

**प्रश्न - कविता के आधार पर पत्थर तोड़नेवाली स्त्री का चित्रण कीजिए।**

उत्तर: इलाहाबाद के पथ पर वह महिला पत्थर तोड़ती थी। वहाँ कोई छायादार पेड़ नहीं था, जहाँ वह बैठ सके। उसका तन साँवला था, पर वह भरे यौवन में थी। आँखें नीचे थी और काम में तत्पर थी। बड़ा हथौड़ा हाथ में लिए प्रहार करते हुए पत्थर तोड़ रही थी।

प्रश्न - 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि ने ग्रीष्म ऋतु का वर्णन किस प्रकार किया है ?

उत्तर: जिन दिनों वह युवती पत्थर तोड़ रही थी वे गर्मी के दिन थे। धूप चढ़ रही थी। सूर्य तमतमाया हुआ था। झुलसाने वाली लू चल रही थी। धरती रूई की तरह जल रही थी। धूल उड़ रही थी।

प्रश्न - कर्म में लीन युवती के मन में क्या-क्या विचार आये ?

उत्तर: कर्म में लीन होते हुए पत्थर तोड़ने वाली युवती के मन में यही विचार आया कि वह एक पत्थर तोड़ने वाली है । इससे पूर्व उसने कवि की ओर देखने से पहले उस भवन की ओर डरते हुए देखा था कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा । वह अपने मन में अपनी गरीबी और पीड़ा के कारण दु:खी थी । उसने सोचा होगा कि ईश्वर ने उसे गरीबी क्यों दी ।

प्रश्न - नारी कहाँ पत्थर तोड़ती थी?

उत्तर: नारी इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती थी।

प्रश्न - पत्थर तोड़ती नारी के तन का रंग कैसा था?

उत्तर: पत्थर तोड़ती नारी के तन का रंग साँवला था।

प्रश्न - 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के कवि कौन हैं?

उत्तर: 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं।

प्रश्न - मज़दूर महिला के हाथ में क्या था ?

उत्तर – एक भारी हथौड़ा

प्रश्न – मज़दूर महिला पत्थर क्यों तोड़ रही थी ?

उत्तर – अपना पेट भरने के लिए

# जागो फिर एक बार

जागो फिर एक बार।
समर में अमर कर प्राण,
गान गए महासिन्धु-से
सिन्धु-नद-तीरवासी!
सैन्धव तुरंगों पर
चतुरंग चमू संङ्ग,
"सवा-सवा लाख पर
एक को चढ़ाऊँगा,"
गोबिन्द सिंह निज
नाम जब कहाऊँगा।
किसने सुनाया यह
वीर-जन-मोहन अति
दुर्जय-संग्राम-राग,
फाग का खेला रण
बारहों महीने में?
शेरों की माँद में
आया है आज स्यार-
जागो फिर एक बार!

प्रसंग - यह अवतरण कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'जागो फिर एक बार' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसमें भारत के अतीत की गौरव-गाथा का स्मरण कर देशवासियों को नवीन उत्साह एवं ओजस्विता अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है।

व्याख्या - ऐतिहासिक परिवेश की ओर संकेत करते हुए कवि 'निराला' कहते हैं कि भारत का अतीत ऐसा गौरवशाली था, जब यहाँ के वीर युद्ध-क्षेत्र में प्राणों की बा ज़ी लगाकर अमर हो जाते थे। ऐसे योद्धाओं की गौरव-गाथाओं को यहाँ के समुद्र के साथ विशाल नदियों और उनके तट पर रहने वाले लोगों ने, अर्थात् सिन्धु-सभ्यता के लोगों ने अनेक बार गाया था। इसलिए जब-जब विदेशी आक्रान्ताओं ने भारत पर आक्रमण किया, तो यहाँ के वीरों ने

चतुरंगिणी सेना सजाकर वीरता के साथ उनका डटकर सामना किया। इसी तरह जब विदेशियों ने आक्रमण किया, तो दशम पातशाह गुरु गोबिन्द सिंह जी ने वीरतापूर्वक यह घोषणा की कि “जब तक सवा-सवा लाख शत्रुओं पर अपने एक वीर को समर्पित नहीं कर दूंगा, तब तक अपना नाम सार्थक नहीं मानूंगा।”गुरु गोबिन्द सिंह जी के कथन का भाव यह था कि विदेशी आक्रान्ताओं का डटकर सामना करने वाले वीरों पर सब कुछ न्योछावर किया जा सकता है।

कवि कहता है कि वीर जनों को मोहित कर लेने वाला यह राग सुनकर वीर उत्साह में झूम उठते थे। वे वीर रणभूमि में इस राग में झूमते हुए दुर्जय हो जाते थे; अर्थात् शत्रु उन पर विजय नहीं पा सकते थे। गुरु गोबिन्द सिंह जी एवं उनके सिक्ख इस प्रकार बारह महीने रणभूमि में खून की होली खेला करते थे। गुरु गो बिन्द सिंह जी की परम्परा वाले शेर आज भी हैं, किन्तु आज शेरों की माँद में सियार (अंग्रेज़) घुस आया है। इसको मारने के लिए हे भारतीय वीरो! अब तुम जाग जाओ, सचेत रहकर शत्रुओं का दमन करो।

सत् श्री अकाल,
भाल-अनल धक-धक कर जला,
भस्म हो गया था काल-
तीनों गुण - ताप त्रय,
अभय हो गये थे तुम
मृत्युन्जय व्योमकेश के समान,
अमृत-सन्तान ! तीव्र
भेदकर सप्तावरण-मरण-लोक,
शोकहारी ! पहुँचे थे वहाँ
जहाँ आसन है सहस्रार
जागो फिर एक बार!

प्रसंग- यह अवतरण कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी “निराला’ द्वारा रचित ‘जागो फिर एक बार’ कविता से लिया गया है। इनमें कवि मातृभूमि की खातिर बलिदान होने वाले सिक्ख वीरों की प्रशंसा करता हुआ कहता है कि

व्याख्या- मुगलों के विरुद्ध जब गुरु गोबिन्दसिंह ने ‘सत्श्री अकाल’ का उद्घोष किया और युद्ध-क्षेत्र में उतरे, तो उनके ललाट में क्रोध रूपी आग की ज्वाला प्रज्वलित हुई थी। उस धधकती आग में काल भस्म हो गया था, तीनों गुण अर्थात् सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण म तथा दैविक, दैहिक व भौतिक तीनों ताप भी भस्म हो गये थे। हे भारतवासियो ! जिसके परिणामस्वरूप तुम शत्रुओं से अभय हो गये थे। उस समय तुम मृत्यु को जीतने वाले देवता

शिवजी के समान बन गये थे । तुम योग-साधना द्वारा सातों आवरणों को भेदकर तथा समस्त शोक से रहित होकर उस उच्चतम स्थान के अधिकारी बन गये थे, जहाँ पर सिद्ध योगी लोग सांसारिक कष्टों से मुक्त होकर, सहस्र-दल कमल में आसन लगाकर परमानन्द में लीन हो जाते हैं। इस प्रकार तुम सांसारिक शोक-सन्ताप से परे होकर जीव न मुक्त हो गये थे। इसलिए तुम एक बार फिर जागकर उसी शौर्य का प्रदर्शन करो।

सिंहनी की गोद से
छीनता रे शिशु कौन?
मौन भी क्या रहती वह
रहते प्राण ? रे अजान।
एक मेषमाता ही
रहती है निर्निमेष
दुर्बल वह-
छिनती सन्तान जब
जन्म पर अपने अभिशप्त
तप्त आँसू बहाती है,
किन्तु क्या,
योग्य जन जीता है,
पश्चिम की उक्ति नहीं-
गीता है, गीता है-
स्मरण करो बार बार-
जागो फिर एक बार!

प्रसंग-प्रस्तुत अवतरण सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला' द्वारा रचित 'जागो फिर एक बार' कविता से उद्धृत है। इसमें कवि ने वीर भोग्या वसुन्धरा की दुहाई देकर देशभक्ति का ओजस्वी स्वर व्यक्त किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि ऐसी शक्ति और ऐसा साहस किसमें है, जो शेरनी की गोद से उसके बच्चे को बलपूर्वक ले सके। क्या शेरनी अपने जीते-जी अपने बच्चे को छीन लेने देगी और स्वयं चुप बैठी रहेगी? अर्थात् सिंहनी ऐसा तब तक नहीं होने देगी, जब तक उसके तन में प्राण रहेंगे। केवल भेड़ ही ऐसी हुआ करती है, जो अपने बच्चे को अपनी गोद से छिन जाने पर चुप रहती है। वह दुर्बलता के कारण ही अपने बच्चे को छिनते हुए टकटकी लगाए देखती है। अपनी सन्तान के छिनने पर वह अपने दुःखी जीवन के कारण जन्मभर आँसू बहाती रहती है, अपने व्यथित जीवन पर रोती रहती है। क्या शक्तिशाली प्राणी इस तरह के

अत्याचार को सहते हुए जीवित रह सकता है? अर्थात् नहीं, क्योंकि वह अत्याचार सहने की अपेक्षा मर जाना अच्छा समझता है। सत्य तो यह है कि इस संसार में शक्तिशाली व्यक्ति ही जीवित रहता है। यह उक्ति पाश्चात्य चिन्तन की देन नहीं है, यह तो गीता का उपदेश है। अतः गीता के कर्मयोग के उपदेश को बार-बार स्मरण करो और जागकर तुम अपने शक्तिशाली स्वरूप को पहचानो।

पशु नहीं, वीर तुम,
समर-शूर, क्रूर नहीं,
काल-चक्र में हो दबे
आज तुम राज कुंवर ! समर-सरताज !
पर, क्या है,
सब माया है-माया है,
मुक्त हो सदा ही तुम,
बाधा-विहीन-बन्ध छन्द ज्यों,
डूबे आनन्द में सच्चिदानन्द रूप
महामन्त्र ऋषियों का
अणुओं-परमाणुओं में फेंका हुआ
"तुम हो महान्, तुम सदा हो महान्
है नश्वर यह दीन भाव,
कायरता, कामपरता।
**ब्रह्म** हो तुम
पद-रज-भर भी नहीं पूरा यह विश्व-भार-
जागो फिर एक बार!

प्रसंग - यह अवतरण कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित 'जागो फिर एक बार' शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसमें कवि ने देशवासियों को जागृति का सन्देश दिया है।

व्याख्या - भारतीयों को अपनी शक्ति का स्मरण कराते हुए कविवर निराला कहते हैं कि तुम पशु (एकदम कायर-नादान) नहीं हों, तुम युद्ध में पराक्रम दिखाने वाले हो। तुम कोई क्रूरता का आचरण करने वाले न होकर न्यायार्थ वीरता का प्रदर्शन करने वाले हो। तुम काल रूपी चक्र में दबे हुए राजकुमार हो तथा युद्ध-क्षेत्र के श्रेष्ठ योद्धा हो। परन्तु तुम इस तरह क्यों हो? सांसारिक आसक्ति या लोकाचार तो माया के बन्धन हैं और तुम सदा ही इन सबसे मुक्त रहे हो। जिस प्रकार बाधाओं से अर्थात् यति, विराम, लघु व गुरु आदि नियमों के बन्धनों से मुक्त

रहने वाली अर्थात् मुक्त छन्द कविता भावपूर्ण लगती है, वैसे ही तुम सदा सांसारिकता से मुक्त रहकर सच्चिदानन्द अर्थात् परम-ब्रह्म के आनन्द में निमग्न रहते हो। इस देश के कण-कण में, अणु-परमाणुओं में ऋषियों के महामन्त्र व्याप्त हैं, जो मानव को सुखद जीवन एवं मुक्ति प्रदान करने वाले हैं। इसलिए हे भारतवासियो ! तुम सदा ही महान् हो, तुम्हारे मन में जो दीनता और कायरता की भावना तथा काम-वासनाओं की आसक्ति के भाव उत्पन्न हो रहे हैं, वे सब नष्ट होने वाले हैं। वस्तुतः तुम ब्रह्म-स्वरूप हो, यह समस्त विश्व तुम्हारे चरणों की धूल से भी तुच्छ है। आशय यह है कि तुम परमात्मा की सृष्टि के सर्वाधिक शक्तिशाली प्राणी हो। अतएव तुम अपनी शक्ति को पहचानो और एक बार फिर जाग जाओ।

## अभ्यास

**प्रश्न – 'सवा-सवा लाख पर एक को चढ़ाऊँगा' यह पंक्ति किसने कही और कवि इसके माध्यम से क्या कहना चाहता है ?**

उत्तर – प्रस्तुत पंक्ति दशम पातशाह श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी ने कही है । कवि इसके माध्यम से भारतीय वीरों को जगाना चाहता है । वह भारतवासियों को श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी और उनके सिक्खों की वीरता के माध्यम से यह याद दिलाना चाहता है कि एक-एक भारतवासी दुश्मन के लिए लाख के बराबर है । इसलिए हमें अपनी शक्ति को पहचानकर उसे सबल बनाना चाहिए ।

**प्रश्न – 'सिंहनी' और 'मेषमाता' के उदाहरण के द्वारा कवि ने क्या सन्देश दिया है ?**

उत्तर – 'सिंहनी' और 'मेषमाता' के उ दाहरण के द्वारा कवि हमें सन्देश देना चाहता है कि जब कोई बाहरी व्यक्ति हम पर आक्रमण करता है तो उसका मुकाबला सिंहनी के सामान करना चाहिए । हमें किसी भेड़ के समान चुपचाप खड़े रहकर अपने भाग्य पर आँसू नहीं बहाने चाहिए । क्योंकि कमज़ोर और कायर सदा ही अत्याचारियों का शिकार बनते आये हैं । शक्तिशाली मनुष्य के सामने कोई आँख नहीं उठा सकता ।

**प्रश्न – 'जागो फिर एक बार' कविता का केन्द्रीय भाव लिखें ।।**

उत्तर - कवि निराला द्वारा रचित 'जागो फिर एक बार' कविता भारत के पराधीनता काल की रचना है। इस कविता में परतन्त्रता से निराश, भविष्य को लेकर कुछ चिन्तित एवं सुप्त भारतीय जनता को उसके गौरवमय अतीत का स्मरण दिलाते हुए नई प्रेरणा और नई दिशा देने का प्रयास किया है ।पराधीनता काल में अनेक कारणों से भारतीय मानस सोया हुआ, आलस्य-प्रमाद से ग्रस्त तथा कायरता-दीनता से आक्रान्त था। उस समय वह अपनी कमज़ोरियों को जानता हुआ भी उन्हें दूर करने में असमर्थ-सा था । ऐसी स्थिति का ध्यान रखकर प्रस्तुत कविता में निराला ने कायरता का विरोध एवं मानव-आत्माओं की अनुभूतिमय

एकता का प्रतिपादन करते हुए ओजस्वी भाव व्यक्त किया है। प्रस्तुत कविता मेंकवि ने देश-प्रेम का भाव व्यक्त करते हुए गुरु गोबिन्द सिंह का स्मरण दिलाकर वीरता अपनाने का स्वर व्यक्त किया गया है। प्रस्तुत कविता का केन्द्रीय भाव देश-प्रेम, कर्मनिष्ठा, वीरता एवं मानवतावादी चेतना की अभिव्यक्ति करना है।

प्रश्न - "सवा सवा लाख पर, एक को चढ़ाऊँगा।" यह प्रतिज्ञा किसने की थी
(क) महाराणा प्रताप ने
(ख) गुरु नानक देव जी ने
(ग) गुरु गोबिन्द सिंह जी ने
(घ) वीर शिवाजी ने
उत्तर: (ग) गुरु गोबिन्द सिंह जी ने
प्रश्न - "एक मेषमाता ही रहती है निर्निमेष"।
इसमें 'मेषमाता' से कवि का तात्पर्य है
(क) साधारण व्यक्ति
(ख) धर्मात्मा व्यक्ति
(ग) अभिशप्त व्यक्ति
(घ) निर्बल व्यक्ति।
उत्तर: (घ) निर्बल व्यक्ति।
प्रश्न - "गीता है, गीता है,
स्मरण करो बार-बार ।"
इस कथन से कवि ने भारतीय को सन्देश दिया है–
(क) कर्मनिष्ठा का
(ख) धर्मनिष्ठा का
(ग) एकता का
(घ) सर्वधर्म सद्भाव का।
उत्तर: (क) कर्मनिष्ठा का
प्रश्न - "योग्य जन जीता है।
पश्चिम की उक्ति नहीं .......... गीता है।"
इस कथन से कवि का कौन-सा मनोभाव व्यक्त हुआ है?
(क) उत्साह
(ख) स्वाभिमान
(ग) घृणा
(घ) आक्रोश

उत्तर: (ख) स्वाभिमान

प्रश्न - 'जागो फिर एक बार' कविता में ......... का भाव निहित है।

(क) राष्ट्रीय नवजागरण

(ख) राष्ट्रीय एकता

(ग) राष्ट्रीय भाषा

(घ) राष्ट्रीय भक्ति

उत्तर: (क) राष्ट्रीय नवजागरण।

प्रश्न - गुरु गोबिन्द सिंह जी ....... के गुरु थे।

(क) ईसाइयों

(ख) जैनों

(ग) सिक्खों

(घ) बौद्धों

उत्तर: (ग) सिक्खों

प्रश्न - भारतीयों को किसका रूप माना गया है?

(क) शिव का

(ख) ब्रह्मा का

(ग) इन्द्र का

(घ) विष्णु का

उत्तर: (ख) ब्रह्मा का।

प्रश्न - "मृत्युंजय व्योमवेश के समान' में 'मृत्युंजय' किसे कहा गया है?

(क) भगवान शिव को

(ख) भगवान श्रीकृष्ण को

(ग) भगवान विष्णु को

(घ) रावण को

उत्तर: (क) भगवान शिव को।

प्रश्न - तीन ताप कौन-कौन से हैं?

(क) दैहिक, दैविक और भौतिक

(ख) लौकिक, आलौकिक और आध्यात्मिक

(ग) समुद्री, आकाशीय और स्थलीय

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (क) दैहिक, दैविक और भौतिक।

प्रश्न - 'जागो फिर एक बार' कविता के रचयिता हैं –

(क) श्री सुमित्रानंदन पंत

(ख) श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

(ग) बालकवि बैरागी'

(घ) श्री जयशंकर प्रसाद'

उत्तर: (ख) श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'


*मार्गदर्शक –*
*डॉ. सुनील बहल*
*सहायक निदेशक*
*एस.सी.ई.आर.टी. पंजाब*

*तैयार कर्ता :-*
*मुनीश कुमार हिंदी शिक्षक*
*सरकारी सीनियर सेकंडरी स्मार्ट स्कूल (कन्या)*
*समराला (लुधियाना)*

*तैयार कर्ता :-*
*महेंद्र कुमार हिंदी शिक्षक*
*सदस्य ज़िला शिक्षा सुधार कमेटी*
*लुधियाना*

संशोधक –
राजन हिंदी शिक्षक
सरकारी मिडल स्कूल
लोहारका कलाँ, अमृतसर

*संशोधक :-*
*कुमकुम हिंदी शिक्षिका*
*सरकारी हाई स्कूल*
*शाहपुर रोड, लुधियाना*